शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अगस्त 2013

रमेश सोबती के साहित्य का मूल्यांकन

यशवीर दहिया
शोधार्थी (हिन्दी)
द्रविडियन विश्वविद्यालय, कुप्पम, आन्ध्र प्रदेश

रमेश सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

*श्री रमेश सोबती का जन्म 27 फरवरी, 1940 को पंजाब प्रदेश के होशियारपुर जिले के भंगाला नामक गांव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री शिवचरण दास (अख़्तर भंगालवी) जो उर्दू के प्रसिद्ध शायर होने के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी भी थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव के सरकारी स्कूल भंगाला में हुई। जब यह 7 वर्ष के थे तब देश आजाद हो गया था। दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात यह पंजाब शिक्षा विभाग में क्लर्क भर्ती हो गए। अपनी सेवा काल के दौरान ही इन्हांेने स्नातक की शिक्षा पूरी की। इन्हांेने लेखन कार्य तब शुरू किया, जब यह नेवल यूनिक चण्डीगढ़ में कार्यरत थे। उसके बाद से ही यह निरन्तर साहित्य साधना में लीन हैं "कार्य की दृष्टि से कविवर सोबती सन् 1958 ई. से पंजाब शिक्षा विभाग सम्बद्ध रहे। पंजाब शिक्षा विभाग में चालीस वर्ष कार्यरत रहने के पश्चात् वे सन् 1998 ई. को अधीक्षक पद से सेवामुक्त हो गये।"***1***

साहित्यिक साधना

हिन्दी के साहित्यकारों में रमेश सोबती का नाम कोई नया नहीं है। चार दशकों से निरंतर साहित्य-साधना में लीन इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी काव्य योगी ने चिन्तन और मनन की गहराई में उतरकर अपनी कविताओं में न केवल आत्म साक्षात्कार करने की चेष्टा की है, बल्कि अपने भीतर के व्यक्तित्व को भी तराशने का प्रयास किया है। कवि की लेखन शैली और काव्य शैली अपनी अनूठी पहचान लिए हुए है। इसलिए कविवर रमेश सोबती का राष्ट्रीय स्तर पर विशेष स्थान हैं। कविता, गजल, निबंध, समीक्षा विभिन्न विधाओं में कवि की भाषा अभिव्यक्ति तथा शिल्प ने इन्हें निश्चित रूप से सशक्त हस्ताक्षर के रूप में स्थापित कर दिया है। अपने पिता और बहनोई से विरासत में मिली शायरी और कविता को इन्होंने इतनी गम्भीरता से अपनाया कि यह पंजाब के हिन्दी काव्य जगत में निरंतर अपनी छाप छोड़ते जा रहे हैं। हिन्दी कविता के सांस्कृतिक इतिहास के वर्चस्व को नकाराना असंभव है। कविता को जिन्दगी की आलोचना मानने वाले इस कवि ने अपनी कविताओं में मिथक, आध्यात्मिकता, दार्शनिकता को नवीन अर्थ देते हुए सफलतापूर्वक आधुनिक संदर्भों में ढाला है। इनका निबंधकार - आलोचक, समीक्षक एवं चिन्तक का रूप भी कम महत्वपूर्ण नहीं, लेकिन इनकी मुख्य रचना विधा कविता है। सभी कविताएं छोटे-छोटे वाक्यों में है, लेकिन ये नए अर्थ को जन्म देती हैं। कवि का कविता संसार सड़क से लेकर राजनीति के गलियारों तक पहरा देती है। यह स्वयं भी अत्याचार सहन करते हुए सोते नहीं हैं और न ही आस-पास अत्याचार सहन करते हुए लोगों को सोने देते हैं। आम आदमी की दुख - तकलीफ के प्रति एक ऐसे सजग रचनाकार हैं जिनकी करनी और कथनी में

कोई अंतर नहीं है। जब इनके मन में समाज के प्रति पीड़ा होती है तो यह कह उठते हैं-

"यह संस्कारों का देश है
यहां
छोटा-मोटा इंकलाब नहीं आता
यहां
जब भी कुछ होता है तो
तब
इतिहास के पन्ने कांपने लगते हैं,
जुगराफ़िया बदशक्ल हो जाता है।"**2**

रमेश सोबती की प्रकाशित कृतियां

रमेश सोबती की विभिन्न विधाओं में 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें से 'मुक्ति की तलाश में', 'जो अमूर्त था', 'आत्मा का एक पर्वत', 'अनुभव में उतरते हुए', 'एक विवश मौन', 'समय के सूरज पर', 'ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में' (काव्य-संग्रह) हैं तो 'गन्तव्य की ओर, तथा 'रमेश सोबती की निबंध - मणियां' (निबंध-संग्रह), 'व्यष्टि से समाष्टि तक' (अन्वेष्ण-संग्रह) हैं। इनकी बहुत सी कविताएं तथा निबंध विभिन्न कृतियों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और अब भी प्रकाशित हो रहे हैं। "जीवन में मैंने पहला गीत लिखा जिसका शीर्षक था, 'जिस देश में गंगा बहती है।' इस आरम्भिक प्रयास को छोड़कर व्यथित रूप से लिखना आरम्भ किया। सन् 1958 में यह गीत 'दैनिक वीर प्रताप' समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ और यह बहुत ही सराहा गया। सन् 1959-60 के आस-पास स्व. श्री राजकपूर ने इसी शीर्षक से एक फिल्म का निर्माण किया जो बाद में बहुत प्रसिद्ध हुई।"**3**

काव्य पक्ष

कविताएं इनके हृदय की अतल गहराइयों से निकली हुई अभिव्यक्ति है, इन्होंने अपना काव्य-सृजन परम्परा से हटकर किया है, इसलिए इन्हें समकालीन हिन्दी कविता में विशिष्ट स्थान मिला है। यह कविता के एक ऐसे यशस्वी हस्ताक्षर है जिनकी रचनाओं में भारतीय इतिहास, पुराण और दर्शन की त्रिवेणी बहती हैं, इनके प्रतीकों के पीछे कभी-कभी पूरे दार्शनिक सिद्धान्त अथवा ऐतिहासिक पौराणिक कथा की व्याख्या छिपी हुई है। नवीन उदभावनाओं के साथ चिन्तन की गहराई और समाज का यथार्थ जुड़ा रहता है, मानवीय मूल्यों एवं मध्यकालीन चेतना की रहस्यवादिता भी इनके काव्य की विशिष्टता है। कवि की संवेदनाएं इनके बहुआयामी परिदृश्य को सामने लाती हैं और साथ ही सोचने को भी बाध्य करती हैं। आज के समाज और मानवीय रिश्तों पर कविताएं केन्द्रित हैं। यह व्यक्ति के पार जाकर सर्वहित की बात करते हैं, यही इनकी कविता की ताकत है। यह अपने चारों तरफ के परिवेश पर विचार व्यक्त करते कहते हैं-

"मेरे चारों तरफ के फैलाव पर
अकुलाता हुजूम
और उसकी गगन-तल-भेदी गूंज
मेरे खून को
बार-बार पलटती है।"**4**

रमेश सोबती ने अपने साहित्य में भारतीय दर्शन तथा संस्कृति के इतिहास को अपनी ही दृष्टि से देखने के प्रयास का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह सफलतापूर्वक पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कहने हेतु एक विशेष दृष्टि रखते हैं। इनके काव्य-संग्रहों के सभी शीर्षकों पर अगर नज़र डाली जाए तो इनमें रहस्यवादिता, चेतना, पुराण तथा मानवीय मूल्यों के सामाजिक सरोकारों से जुड़ी संवेदनाओं की झलक पहले ही मिल जाती है। यह काव्य-सृजन

के समय अपने व्यक्तित्व से पलायन करके कविता की अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र हो जाते हैं। शब्द उनके संवेदनशील हृदय की अतल गहराइयों से निकलते हैं, जो पाठक को बर्बस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। इसका उदाहरण इस कविता में देखा जा सकता है-

"ठंडे महीनों की कुनकुनी धूप में
कौओं और तोतों का
छत पर
बिखेर चावल और बाजरे के दानों को चुगना,
मिट्टी के कसोरे से पानी पीना,
यह सब देख
बहुत अच्छा लगता है
कि सुख-स्वाद
खुराक में नहीं, भूख में है।"**5**

कई कविताओं में इनके विद्रोही मन की झलक भी मिलती है तथा मृत्यु बोध की अनुभूति के लिए अध्यात्म के अलौकिक प्रकाश की तरफ अग्रसर होने का प्रयास भी है। "सपाट, सीधी भाषा, संवाद तथा संलाप की स्थिति और बौद्धिक चिन्तन का आवेग, कवि की अपनी विशिष्टताएं हैं। 'अलबेयर कामू' ने कहीं लिखा है, हम में प्रत्येक के भीतर जेलखाने हैं, अपराध भाव है, ध्वंसात्मक तत्त्व है, किन्तु उन्होंने समाज में उगलना हमारा कर्तव्य नहीं है। हमारा कत्र्तव्य इनके विरूद्ध अपने भीतर और दूसरों के भीतर निरंतर जूझते रहना है। इसका अर्थ यह हुआ कि कवि या लेखन का रचनात्मक उद्योग सार्थक है, गौरवपूर्ण है।"**6**

रचनाकार का निबन्धकार रूप

अनेक सम्मानों से अंलकृत श्री रमेश सोबती ने अपनी विद्वता की छाप उन विधाओं में छोड़ी है जिनमें वह सदा पारंगत रहे हैं। काव्य-संग्रहों का अनुशीलन करने के उपरान्त, जब इनके निबंध संग्रहों का अनुशीलन किया गया तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पंक्तियों का अर्थ और गहरा हो गया। कविताओं में भावों और विचारों की जो गंभीरता है वैसी ही गम्भीरता इनके निबंधों में भी मिली है। सीधी-सादी, सरल व अर्थ गर्भित भाषा में इनके निबंध लिखे गए हैं। इनके निबंध संग्रहों में शामिल निबंधों की विषय-वस्तु पर ध्यान दें तो ये निबंध हिन्दी भाषा के विविध विचार-बिन्दुओं-गीत, गजल, कविता, व्यंग्य अनुवाद, पत्रकारिता, भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान, सांस्कृतिक प्रदूषण और चिकित्सा शास्त्र के साथ-साथ कतिपय गीतकारों व गजलकारों की रचनाओं से जुड़े हैं। "साहित्यिक निबन्धों में सोबती जी ने विभिन्न साहित्यकारों के लेखन की प्रासंगिता तथा राष्ट्र चेतना, गीत-कविता की काव्य-प्रवृत्तियों, उनके विकास एवं भविष्य तथा परिवर्तन से जुड़े मूल प्रश्नों विचार व्यक्त किए हैं। विश्लेष्णात्मक विधा को अपनाते हुए सोबती जी ने कुछ लब्ध प्रतिष्ठित गीतकारों तथा कवियों की रचनाओं को उदाहरण स्वरूप रखकर उनके कथ्य, शैली तथा तत्त्वों का गहन विश्लेषण किया है। डॉ गार्गीशरण मिश्र मराल, भगवत दूबे, डॉ महेन्द्र भटनागर, डॉ कैलाश गौतम, डॉ योगेन्द्र बख्शी सरीखे कवियों, गीतकारों की काव्य संवेदना को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत किया है। वही मैथिलीशरण गुप्त , डॉ नगेन्द्र, डा॰. नरेन्द्र कोहली, डॉ हरमहेन्द्र सिंह बेदी, डॉ रामनिवास 'मानव', धर्मपाल साहिल आदि रचना जगत पर समीक्षात्मक निबंध लिखे हैं।"**7**

साहित्य में कविता के वर्तमान सन्दर्भ को रेखांकित करते हुए उसकी भविष्य में स्थिति के

प्रति आशंका व्यक्त करते हैं, जो ज्वंलत समस्या भी है। यांत्रिकता की तरफ से बढ़ रहे मानवीय जीवन में इनकी संवेदनाएं निरंतर विरल भाषा के व्यावसायिक, राजनीतिक, प्रचारत्मक उपयोग के कारण, काव्यात्मक विश्वसनीयता बढ़ा रही है। हिन्दी कविता के भविष्य के प्रति आशंकित होते हुए हिन्दी भाषा के प्रति निबंधकार का स्वर पूर्णतया आशावादी है। कई बार कहते भी हैं - 'हिन्दी देश के एकता की कड़ी है, यही एक नितान्त सत्य है। हिन्दी को भारत में प्रधानता मिलने के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा ही नहीं बल्कि विश्व भाषा बनने का लक्षण है।' निबंधात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रचनाकार का आधार मानवीय यथार्थ है। यह आधार जहां एक ओर सरल, सुबोध, नवीन, अनुप्राणित व अर्थपूर्ण है, वही यह आधार किसी भी रचनाकार को साहित्य में स्थाई स्थापत्य प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है। वे कविता और निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध है। ऐसे सृजेता प्रायः अधिक संवेदनशील हुआ करते हैं। इनकी यही संवेदना साहित्य की विविध विधाओं का रूप लिया करती है। इन रूपों में रचनाकार के व्यक्तित्व और संस्कारों की प्रच्छिाया हमेशा वैसे ही तेजोमय, दृष्टिमय होती रहती है, जैसे सघन बादलों में मध्य विद्युत - छटा दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने पंजाबी भाषी जैसे प्रदेश के छोटे से गांव में जन्म लेकर हिन्दी-काव्य जगत में राष्ट्रीय तर पर प्रसिद्ध प्राप्त करके एक विशेष उपलब्धि प्राप्त की है। पंजाबी भाषा के बीच हिन्दी भाषा को विशेष स्थान दिलाया है, जिसके लिए यह मिसाल बन गए हैं। रचनाकार ने जीवन एवं साहित्य के सभी आयामों, दिशाओं का समावेश अपने निबंधों में किया है। भारतीय संस्कृति तथा वैश्विक समस्याओं के प्रति चिन्ता एवं चिन्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लेखक के निबंध सांस्कृतिक आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। निबंधकार का चिन्तन हर विषय पर गम्भीर एवं तर्कयुक्त रहा है। यह एक शब्दशिल्पी है, जो विषयानुकूल शब्द संयोजन करते हैं। निबंधों की भाषा प्रांजल, परिष्कृत, प्रभावशाली तो हैं ही तथा साथ में विचारानुकूल भी हैं। भारतीय संस्कृतिक के संरक्षक, संवाहक और आक्रोशी प्रवृति के विनम्र रचनाकार हैं। "कैकेयी में नारी प्रकृति के परस्पर विरूद्ध प्रवृतियों का समन्वय पाया जाता है, उसके चरित्र में मानसिक द्वन्द्व चित्रित किया गया है। मनोभावों का पारस्परिक संघर्ष मानस में प्रस्तुत किया है, यह चरित्र अपने स्वभाविक रूप में नितान्त यर्थाथ है। सुमित्रा का चरित्र बहुत खूबसूरत है। वह निश्छल स्वभाव, असीम त्याग तथा धर्म-निष्ठा का वैभव उसके चरित्र को दमका देता है। लक्ष्मण मंे सुमित्रा के संस्कार साकार हो उठे हैं।"8 निबंधों में पर्यावरण संबंधी चिन्ता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है और राजनैतिक चिन्तन भी काफी प्रभावशाली रहा है, जो इस प्रकार है- "जैसे प्रजातन्त्र मूल्यों को ताक पर रखकर पावर और पैंसे में सारे सुख देखने की लालसा ने सारे नियमों, कानूनों, मर्यादाओं को ध्वस्त करने की ऐसी मनोवृति पैदा कर दी है कि कोई भी सुरक्षित नहीं है। सोचना तो यह है कि भारत विकास की ओर बढ़ रहा है या विनाश की ओर, सरकार द्वारा बनाई जाने वाली नीतियों से आम जनता परेशान हो गई है।"**9** विभिन्न धर्म गुरुओं के व्यक्तित्व की झलक भी पाठकों में साहित्य के प्रति रूचि पैदा करती है।

निष्कर्ष

श्री रमेश सोबती का जीवन साहित्यिक गतिविधियों के कारण काफी व्यस्त रहता है, लेकिन लेखन के लिए जब भी इन्हें समय मिलता है, तब अपना समय साहित्य की साधना में लगाते हैं। कविताएं समय के दबावों और आदमी के अभाव एवं निराशा का प्रतिरूप है। कविताओं व निबंधो में समुद्र जैसी गहराई तथा असीम ज्ञान का खजाना है। साहित्य कोरा शब्दजाल नहीं है। शब्द इनके संवेदनशील हृदय से निकली अभिव्यक्ति है जो पाठक को बर्बश अपनी और आकर्षित कर लेते हैं। ईश्वर ऐसे महानुभावों को चिरायु प्रदान करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रमेश सोबती का काव्यः वस्तु और शिल्प, पृष्ठ-15
2. अनुभव मंे उतरते हुए, पृष्ठ-27
3. रमेश सोबती की निबन्ध मणियां, पृष्ठ-46 व 47
4. आत्मा का एक पर्वत, पृष्ठ-50
5. ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में, पृष्ठ-65
6. गंतव्य की ओर, पृष्ठ-39
7. साहित्यांचल (अक्तूबर-दिसम्बर,2010) पृष्ठ-47
8. रमेश सोबती की निबन्ध-मणियां, पृष्ठ-43
9. व्यष्टि से समष्टि तक, पृष्ठ-192

सन्दर्भ ग्रंथों/पत्रिकाओं की सूची

1. आत्मा का एक पर्वत, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक-5230 आरोडिया स्ट्रीट, पटियाला, प्रथम संस्करण 1976।
2. अनुभव मंे उतरते हुए, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक-आधुनिक किताब घर जालन्धर, प्रथम संस्करण 1999।
3. राजपाल हिन्दी शब्द-कोश, लेखकः डाॅ. हरदेव बाहरी, प्रकाशक-राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पन्द्रहवां संस्करण 2000।
3. ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक-शाहीन प्रकाशन, आलमबाग, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2008।
4. गंतव्य की ओर, लेखकः रमेश सोबती, प्रकाशक-उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2007।
5. रमेश सोबती की निबन्ध-मणियां, लेखकः रमेश सोबती, प्रकाशक-उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2008।
6. व्यष्टि से समष्टि तक, लेखकः रमेश सोबती, प्रकाशक-देवेश प्रकाशन, जमालपुर, लुधियाना, प्रथम संस्करण 2010।
7. रमेश सोबती का काव्यः वस्तु और शिल्प, लेखकः दविन्दर कौर, प्रकाशक-शाहीन प्रकाशन, आलमबाग, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2008।
8. साहित्यांचल (भीलवाड़ा), अक्टूबर-दिसम्बर, 2010।